पत्र लेखन - अनौपचारिक पत्र

फैशन में समय नष्ट करने वाली छोटी बहन को प्रेरणाप्रद पत्र लिखिए।

4/50, पश्चिम विहार,

नई दिल्ली।

दिनांक: ....

प्रिय बहन पल्लवी,

शुभाशीष!

मुझे यह ज्ञात हुआ कि तुम अपनी शिक्षा के प्रति बहुत ही लापरवाह हो गई हो। तुम नियमित रूप से विद्यालय भी नहीं जा रही हो और अपनी पढ़ाई में भी ध्यान नहीं दे रही हो। तुम्हारी अध्यापिका द्वारा तुम्हें चेतावनी भी दी जा चुकी है। ये सब सुनकर मुझे बहुत कष्ट हुआ है।

तुम तो बहुत समझदार हो। तुम्हें इस बात का ज्ञान होना आवश्यक है कि तुम अपना बहुमूल्य समय पढ़ने-लिखने के स्थान पर फैशन में और व्यर्थ के क्रियाकलापों में नष्ट कर रही हो। मनुष्य के जीवन में शिक्षाकाल बहुत महत्वपूर्ण होता है। हमारे भविष्य की नींव इसी समय पर रखी जाती है। यदि तुम इसी तरह पढ़ाई-लिखाई छोड़कर फैशन के नाम पर समय नष्ट करती रहोगी तो दिशा भटक जाओगी। तुम स्वयं अपने हाथों से अपना भविष्य बर्बाद कर बैठोगी। पिताजी को हमसे बहुत आशाएँ हैं। हमारी शिक्षा में कोई बाधा न आए, इसके लिए वह दिन-रात मेहनत कर रहे हैं। इस तरह के व्यवहार से तुम उनकी मेहनत व आशाओं में पानी फ़ेर रही हो।

आशा करती हूँ कि तुम मेरे इस पत्र को गंभीरता से लोगी और अपना ध्यान अपनी पढ़ाई में लगाओगी।

तुम्हारी बड़ी बहन,

लता

विद्यालय में नियमित उपस्थिति और परीक्षा की तैयारियों हेतु सलाह देते हुए भाई को पत्र लिखिए।

1670, मुनिरका,
नई दिल्ली।

दिनांक: ....

प्रिय भाई रवि,

सदा प्रसन्न रहो!

कल पिताजी का पत्र मुझे मिला। यह जानकर मुझे बहुत दु:ख हुआ कि तुम नियमित रूप से विद्यालय नहीं जा रहे हो और न ही अपनी परीक्षा की तैयारियाँ भली-भाँति कर रहे हो। पिताजी तुम्हारे इस प्रकार के व्यवहार से बहुत दुखी हैं। भाई इस प्रकार का व्यवहार सही नहीं है। तुम्हारे इस लापरवाही वाले व्यवहार से तुम्हारे जीवन में विपरीत असर पड़ेगा।

जीवन में यदि सफलता प्राप्त करना चाहते हो तो तुम्हें कड़ा परिश्रम करना पड़ेगा। पढ़ाई में पूरा ध्यान लगाना पड़ेगा। यदि तुम व्यर्थ के क्रियाकलापों में अपना कीमती समय व्यतीत करोगे तो अपने भविष्य के साथ खिलवाड़ करोगे। इस तरह तुम माता-पिताजी की भावनाओं के साथ भी खिलवाड़ करोगे। उन्हें तुमसे बहुत अपेक्षाएँ हैं। तुम्हें चाहिए कि इस समय तुम सिर्फ़ अपनी परीक्षाओं पर ध्यान दो। यदि तुम नियमित विद्यालय नहीं जाओगे और परीक्षाओं की भली-भाँति तैयारी नहीं करोगे तो परीक्षाएँ पास करना कठिन हो जाएगा।

आशा करता हूँ कि तुम अब किसी को भी शिकायत का मौका नहीं दोगे। घर में माँ और पिताजी को चरण स्पर्श कहना व नीता को प्यार।

तुम्हारा भाई,

विशाल

प्रथम श्रेणी में दसवीं कक्षा उत्तीर्ण करने पर बधाई देने हेतु बड़ी बहन को पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन,

दिनांक............

आदरणीय दीदी,

सप्रेम चरण स्पर्श!

यहाँ सब कुशलमंगल है। आशा है माता-पिता एवं भैया के साथ आप भी कुशलतापूर्वक होंगी। कल मैंने समाचार-पत्र में परीक्षा परिणाम के साथ आपका चित्र भी देखा तो खुशी का ठिकाना नहीं रहा। आपने पूरे शहर में सभी विषयों में 95 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं। आपकी इस सफलता के लिए बहुत-बहुत बधाई। आपकी इस सफलता ने मेरा सर गर्व से ऊँचा कर दिया है। मैंने अपने सभी मित्रों को आपका परिणाम दिखाया, वे भी बेहद खुश हुए। दीदी आज यह दिन आपके परिश्रम के कारण ही हम सब देख पाएँ हैं। पिताजी तो आपकी सफलता से फूले नहीं समा रहे होंगे।

मैं भी आपकी तरह हीं प्रथम आना चाहती हूँ। कृपया मुझे भी आवश्यक सलाह दीजिएगा ताकि मैं भी पिताजी का नाम आपकी ही तरह रौशन कर सकूँ। मैं आपको एक छोटा-सा उपहार भेज रही हूँ। आशा है, आपको पसंद आएगा। शेष बातों को पत्र द्वारा सूचित कीजिएगा। सभी बड़ों को प्रणाम एवं छोटों को प्यार। अपनी बहन की तरफ़ से आपकी सफलता पर एक बार फिर से बधाई।

आपकी छोटी बहन,

कमल

माताजी को उनकी द्वारा भेजी गई पुस्तक के लिए पत्र लिखकर धन्यवाद प्रकट कीजिए।

परीक्षा भवन,

दिनांक...............

आदरणीय माताजी,

सादर चरण स्पर्श!

कल आपका पत्र और पार्सल मिला। पत्र में परिवार की कुशलक्षेम जानकर अच्छा लगा। मैं भी आपके आशीर्वाद से यहाँ कुशलतापूर्वक हूँ। आपकी बहुत याद आती है। आपकी भेजी कहानियों की पुस्तकें, मुझे मिल गई हैं। पुस्तकें पाकर मन प्रसन्न हो गया। मैं बहुत दिनों से ऐसी ही पुस्तकों की तलाश में था। अवकाश के दिन में ऐसी पुस्तकों की बहुत आवश्यकता होती है। आपने मेरी आवश्यकता का ध्यान रखा इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

आपने जो पुस्तकें भेजी हैं, वे मैं अपने खाली समय में पढ़ूँगा। मैंने पुस्तकों को देखा है। इनमें प्रेमचंद की कहानियाँ, रविन्द्रनाथ टेगौर की कहानियाँ और पंचतंत्र की कहानियाँ हैं। इन पुस्तकों में जो कहानियाँ हैं, वे सभी बहुत अच्छी एवं शिक्षाप्रद हैं। इन कहानियों को मैं केवल पढूंगा ही नहीं, उन पर अमल करने का भी प्रयास करूँगा। इन पुस्तकों को मैं अपने पास बहुत संभाल कर रखूँगा। मेरे मित्रों को भी पुस्तकें बहुत पसंद आई हैं। अब पत्र समाप्त करता हूँ। पिताजी को प्रणाम कहिएगा। सभी को भी प्रणाम और छोटों को प्यार। पत्र अवश्य लिखिएगा।

आपका पुत्र,

जतिन

कक्षा में हुई दुर्घटना का वर्णन करते हुए पिताजी को पत्र लिखिए।

4/52, पटेल नगर,

देहरादून।

दिनांक: ....

आदरणीय पिताजी,

चरण स्पर्श!

बहुत दिनों से आपका पत्र नहीं मिला। अत: मुझे चिन्ता होने लगी है। आशा करता हूँ कि घर में सब कुशलमंगल होगा। कुछ दिनों पहले हमारे विद्यालय में एक दुखद घटना घटी थी।

मेरे छात्रावास में मेरा एक मित्र कमल है, जिसे आप जानते ही हैं। हम सब को हमारी अध्यापिका विज्ञान प्रयोगशाला (साईंस लैब) में ले गई थीं। वह हमें एक प्रयोग करके दिखा रहीं थी। मेरा एक सहपाठी जो की लकड़ी के शीशे वाली अलमारी के सहारे से खड़ा था। अचानक उसके भार से अलमारी सामने पड़ी मेज पर गिर पड़ी। उस अलमारी में ज्वलनशील पदार्थ रखे हुए थे। उनसे लकड़ी की अलमारी में और मेज में आग लग गई। स्थिति को समझते ही अध्यापिका ने सभी बच्चों को तुरंत बाहर निकलने के लिए कहा और फायर आलार्म बजा दिया। अधिकतर बच्चे कमरे से तुरंत बाहर निकल गए परन्तु मेरा मित्र पीछे रहने के कारण छूट गया।

उसे अपने पास न देखकर मैं उसकी सहायता के लिए वापस कमरे में भागा। मैंने देखा कि वह डर के मारे एक ही जगह पर खड़ा रो रहा था। मैं भागकर उसके पास गया और उसे खींचकर वहाँ से ले आया।

आगे बढ़ने के कारण वह और मैं थोड़ा-सा झुलस गए हैं। परन्तु घबराने की आवश्यकता नहीं है। चिकित्सक के अनुसार मामूली-से घाव हैं जो जल्दी भर जाएँगे। माताजी को कहिएगा मैं कुशल हूँ। उन्हें मेरा सादर प्रणाम कहिएगा।

आपका पुत्र,

अमित

पिताजी को घर के विषय में बताते हुए पत्र लिखिए।

562, कालीबाड़ी,

नजदीक बिरला मंदिर,

नई दिल्ली।

दिनांक: ....

आदरणीय पिताजी,

सादर प्रणाम!

बहुत दिनों से आपका पत्र नहीं आया। अत: माताजी ने आपको पत्र लिखकर आपकी कुशलक्षेम जानने के लिए कहा है। आशा करता हूँ कि आप वहाँ कुशलतापूर्वक होगें। पिताजी आगे का हाल-समाचार यह है कि बीना और सोहन का परीक्षा परिणाम आ गया है। दोनों अपनी कक्षाओं में प्रथम आएँ हैं। वे आपके आने की प्रतिक्षा कर रहे हैं। आपने उन्हें प्रथम आने पर मनोवांछित वस्तु पुरस्कार देने का वादा किया था। मेरी दसवीं की परीक्षा अगले महीने से आरंभ होने वाली है। मैं परीक्षा की तैयारियों में ही लगा हुआ हूँ। इस वर्ष भी मैं प्रथम स्थान प्राप्त करूँ, मेरा यही प्रयास है।

दादाजी का रक्त का दबाव (बल्ड प्रेशर) बढ़ गया था। डाक्टर अंकल के अनुसार उनकी दवाइयाँ बदलनी पड़ेगी। दादीजी को हल्की खांसी है। जैसा कि आप जानते हैं, सर्दी के मौसम में ऐसा उनके साथ होता रहता है। डाक्टर को दिखाकर उन्हें दवाइयाँ दी जा रही हैं। बुआजी को नई नौकरी मिल गई है। वह अब किसी कंपनी में विज्ञान विशेषज्ञ के रूप में कार्यरत हैं। उन्हें 15000 हजार रूपये मासिक मिला करेगा। माताजी के घुटनों में आजकल दर्द रहता है। डाक्टर ने उन्हें वजन कम करने एवं काम कम करने की सलाह दी है। परन्तु आप जानते हैं, वह डाक्टर की बातों पर ध्यान नहीं देती हैं।

आप इस बार कब घर आ रहे हैं, अवश्य लिखिएगा। आपसे अनुरोध है कि पत्र लिखते रहिएगा। आपके पत्र न आने से सभी बड़े परेशान हो जाते हैं। पत्र समाप्त करता हूँ। आपके पत्र की प्रतीक्षा रहेगी। आपका पुत्र,

दीपक

छोटी बहन को नियमित रूप से योग एवं प्राणयाम करने के लिए पत्र लिखिए।

564, चिराग दिल्ली,

नई दिल्ली-110017

दिनांक: ....

प्रिय सोमा,

बहुत प्यार!

बहुत दिनों से तुमसे बात करना चाह रहा था परन्तु व्यस्तता के कारण नहीं कर पाया। कल पिताजी का पत्र आया, उससे पता चला कि तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। टाइफाइड के बाद से तुम्हारा स्वास्थ्य संभलने में ही नहीं आ रहा है। इस तरह स्वास्थ्य की अनदेखी करना ठीक नहीं है। तुम्हें जहाँ समय पर सोना व भोजन करना चाहिए, वहीं तुम्हें थोड़ा-सा समय योग एवं प्राणायाम के लिए भी निकालना चाहिए। इससे रक्त का संचारण सुचारू रूप से होगा, जिससे शरीर में प्रतिरोधक क्षमता बढ़ेगी और माँसपेशियों को मज़बूती मिलेगी। ऐसा करने से तुम सदैव प्रसन्नचीत व स्वास्थ्य रहोगी।

प्रात:काल उठकर थोड़ा-सा समय योग व प्राणयाम का अभ्यास करो। मेरी इस सलाह को मानकर नियमित रूप से योग व व्यायाम करो। ऐसा करने से तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक रहेगा। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए योग एक गुणकारी औषधि के समान कार्य करता है। तुम्हें ज़रूर लाभ मिलेगा। साथ में तुम फलाहार व

संतुलित भोजन अवश्य लो। इस तरह तुम अपनी बीमारी से उत्पन्न कमजोरी को जल्दी से समाप्त कर पाओगी।

आशा करता हूँ कि तुम इस पर जल्दी से अमल करना आरंभ कर दोगी।

तुम्हारा भाई,

कैलाश

पत्र लेखन का लाभ एवं महत्त्व बताते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।

ए-103, वैशाली,

गाज़ियाबाद।

दिनांक: ....

प्रिय मित्र,

बहुत स्नेह!

बहुत समय से तुम्हारा पत्र नहीं आया था। अत: तुम्हारा हाल-समाचार जानने के लिए तुम्हें पत्र लिख रहा हूँ। तुम आजकल पत्र कम लिखते हो। फ़ोन पर ही कभी-कभी बात होती है। आजकल एस.एम.एस. भी काफ़ी प्रचिलित हो गया है। दो पंक्तियाँ लिखी और समाचार दे दिया। परन्तु एस.एम.एस. दिल के भावों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में असमर्थ है।

इसी तरह कंप्यूटर के आने से ई-मेल का चलन भी बढ़ गया है। जब मर्ज़ी किया मेल में हाल समाचार लिख दिया परन्तु इसके लिए घर में कंप्यूटर और इंटरनेट का होना आवश्यक है। हर मध्यम परिवार के घर में यह हो ज़रूरी नहीं है।

मेरे अनुसार पत्र लेखन से इनका कोई मुकाबला नहीं है। पत्र का इंतज़ार करने का आनंद, पत्र मिलने पर उसको विस्तार से पढ़ना, फिर अलमारी में रख देना और याद आई तो फिर पत्र निकालना और दोबारा, तिबारा पढ़ना एक अलग ही अनुभव है। यह आनंद फोन काल, एस.एम.एस. और ई-मेल से नहीं मिल सकता। एक लंबे समय के बाद पत्र मिलना और पत्र मिलने की प्रतीक्षा इत्यादि सब अनोखी बातें हैं।

इस पत्र का उत्तर तुम मुझे पत्र लिख कर ही करना और विस्तार से सबके बारे में लिखना। अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना तथा चीनू को प्यार देना। तुम्हारे पत्र का इंतजार रहेगा।

तुम्हारा मित्र,

अपूर्व

खोई वस्तु लौटाने पर अपने मित्र को पत्र लिखिए।

7/14, वैशाली,

गाज़ियाबाद।

दिनांक: ....

प्यारे सुभाष,

बहुत प्यार!

आज ही तुम्हारा भेजा हुआ पार्सल और पत्र प्राप्त हुआ। यह जानकर अच्छा लगा कि तुम वहाँ पर कुशलमंगल हो। तुम्हारे दिए गए पार्सल को खोलकर देखा तो मानो मुझे मनोवांछित वस्तु मिल गई। तुम्हारा जितना भी धन्यवाद करूँ मित्र कम है। तुमने मुझे मेरे दादाजी की दी हुई घड़ी ढूँढ कर भेजी है। यह मेरे लिए अमूल्य वस्तु के समान है।

घर बदलते समय यह घड़ी मेरे हाथ से गिर कर कहीं खो गई थी। हमने उस समय इसे बहुत खोजा परंतु हमें नहीं मिली। तुमने मुझे आश्वासन दिया था कि तुम इसे ढूँढकर शीघ्र भेज दोगे। तुमने अपना वादा पूरा किया।

यह घड़ी मेरे दादाजी ने परीक्षा में प्रथम आने पर इनाम स्वरूप मुझे भेंट की थी। उनके जाने के बाद यह घड़ी हमेशा मुझे उनकी याद दिलाती है। मैं इस घड़ी को हमेशा अपने पास रखता हूँ। इसके पास में होने से मुझे प्रतीत होता है कि उनका प्यार और आशीर्वाद सदैव मेरे साथ है। यह घड़ी जहाँ मुझे उनकी याद दिलाती है, वहीं मुझे समय का मूल्य करना भी बताती है।

तुम्हें एक बार फिर धन्यवाद देता हूँ। मित्र अब पत्र समाप्त करता हूँ। अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना व सुधा को प्यार। पत्र का उत्तर अवश्य देना। तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा रहेगी।

तुम्हारा मित्र,

रोहित

मित्र के जन्मदिन पर नहीं आने के लिए क्षमा माँगने हेतु पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन,

दिनांक............

प्रिय मित्र जावेद,

सस्नेह नमस्ते!

बहुत दिनों से तुम्हें पत्र लिखने की सोच रहा था। परन्तु उससे पहले ही तुम्हारा पत्र आ गया। तुम्हारा कुशलमंगल पढ़कर मन को बहुत प्रसन्नता हुई। भगवान की कृपा से मैं भी यहाँ सुखपूर्वक हूँ। यह जानकर हर्ष हुआ कि तुम अपना जन्मदिन बहुत धूमधाम से मना रहे हो।

तुम्हारे सभी पुराने और नए मित्र वहाँ आएँगे। तुम्हें बहुत ही अच्छा लगेगा। परन्तु मित्र मैं इस अवसर पर सम्मिलित नहीं हो पाऊँगा क्योंकि उस समय मेरी परीक्षाएँ चल रही होंगी। आज ही विद्यालय में परीक्षा की तारीख घोषित कर दी गई है। तुम जानते हो इन्हें छोड़ा नहीं जा सकता। मैंने इस परीक्षा के लिए बहुत परिश्रम किया है। अतः तुम्हारे जन्मदिन में नहीं आने के लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। मुझे इसका बहुत दुख है। इसलिए मैंने सोचा है कि छुट्टियों में तुम्हारे पास आऊँगा और कुछ समय बिताऊँगा। आशा करता हूँ तुम मेरी परेशानी को समझोगे।

मैं एक छोटा-सा उपहार भेज रहा हूँ। आशा है तुम्हें पसंद आएगा। माताजी व पिताजी को चरण स्पर्श कहना। तुम्हें जन्मदिन की ढेर सारी शुभकामनाएँ। मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना रहेगी कि वह तुम्हें लम्बी आयु दे और तुम्हारे ऊपर अपना आशीर्वाद सदैव बनाए रखे। अब पत्र समाप्त करता हूँ। तुम्हारे पत्र का इंतजार रहेगा।

तुम्हारा मित्र,

हर्ष

भाई की सगाई में सम्मिलित होने के लिए मित्र को निमंत्रण-पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन,

दिनांक...........

प्रिय मित्र गौरव,

बहुत प्यार!

बहुत दिनों से तुम्हारा पत्र नहीं आया है। अतः तुम्हारी चिन्ता लगी रहती है। इसलिए मैंने ही तुम्हें पत्र लिखना उचित समझा। मित्र तुम कैसे हो? सोचा आज तुमको पत्र लिखकर अपनी खुशी भी तुम्हारे साथ बाँटी जाए। मेरे सभी मित्रों में से तुम्हीं मेरे सबसे करीबी मित्र हो। पत्र लिखने का विशेष कारण है। तुमको जानकर अति प्रसन्नता होगी कि मेरे बड़े भाई सुलभ का विवाह निश्चित हो गया है। उनकी सगाई भी बड़े धूमधाम से की जा रही है। उनकी सगाई की रस्म दिनांक............ को होगी। इस अवसर पर तुम्हें ज़रूर आना है। इस पत्र को ही निमंत्रण पत्र समझना। माता-पिताजी ने खासतौर पर तुम्हें निमंत्रण भेजा है और सगाई में आने का आग्रह किया है। निमंत्रण-पत्र घर पर आकर नहीं देने के लिए क्षमा मांगी है।

मुझे पूरी आशा ही नहीं विश्वास है कि तुम अवश्य आओगे। इस अवसर की शोभा ही नहीं बढ़ाओगे बल्कि सगाई व्यवस्था देखने में मेरी सहायता भी करोगे। हमारे और भी मित्र आ रहे हैं। अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना। अपने आने की तिथि व कार्यक्रम पत्र में लिखकर अवश्य देना। तुम्हारे पत्र का इतंजार रहगा।

तुम्हारा मित्र,

रवि

मित्र को गर्मियों की छुट्टियों में दिल्ली भ्रमण हेतु आंमत्रित कीजिए।

सी-589/4,

नौरोजी नगर,

नई दिल्ली-110023

दिनांक: ....

प्रिय सखी पायल,

बहुत प्यार!

गर्मियों की छुट्टियाँ आरंभ हो रही है। तुमने इस बार छुट्टियों में क्या करने का सोचा है? मैंने सोचा है तुम्हें इस बार अपने घर छुट्टियों में बुला लिया जाए। बहुत दिनों से मैं तुम्हें दिल्ली आने के लिए कह रही हूँ। तुम कोई-न-कोई बहाना बनाकर बात को टाल देती हो। इस बार तुम्हें यहाँ आने ही पड़ेगा। दोनों साथ में छुट्टियों का आनंद लेंगे।

दिल्ली एक ऐतिहासिक शहर है। इसे सम्राटों की राजधानी बनने का सौभाग्य प्राप्त है। यहां पर बहुत-सी ऐतिहासिक इमारतें हैं। इनमें कुतुबमीनार, लाल किला, जामा मस्जिद, इंडिया गेट, राष्ट्रपति भवन इत्यादि प्रसिद्ध इमारतें हैं, जो देखने योग्य हैं। मैंने योजना बनाई है कि हम एक-एक करके सभी ऐतिहासिक इमारतें देखेंगे। उसके बाद हम कमल मंदिर, कनॉट प्लेस, जंतर-मंतर आदि स्थान मैट्रो से देखने जाएँगे। दिल्ली में मेट्रो से यात्रा करने का मज़ा ही अलग है। मैं तुम्हें मेट्रो की सैर कराऊँगी। हम 'एडवेंचर आईलैंड' भी जाएँगे वहाँ पर विभिन्न किस्मों के झूले हैं। वहाँ के रेन डाँस में डाँस करने का अपना ही आनंद है।

मेरी योजना तुम्हें कैसी लगी? इस बार निराश मत करना। अपने आने की तिथि व कार्यक्रम पत्र में लिखकर बता देना। अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना एवं टिमटिम को प्यार।

तुम्हारी सखी,

तरूणा

मित्र को तीर्थ स्थान की यात्रा का वर्णन करते हुए पत्र लिखिए।

56/2, सुभाष नगर,

नई दिल्ली-10027

दिनांक: ....

प्रिय मोहन,

स्नेह!

बहुत दिनों से तुमसे सम्पर्क न होने के कारण तुम्हें पत्र लिख रहा हूँ। आशा करता हूँ कि वहाँ सब ठीक-ठाक होगा। पिछले सप्ताह मुझे परिवार के साथ हरिद्वार जाने का मौका मिला।

हम प्रात: सात बजे हरिद्वार पहुँच गए। वहाँ स्थान-स्थान पर धर्मशालाएँ और मंदिर बने हुए थे। पूजा की विभिन्न सामग्रियों से दुकानें भरी पड़ी थी। हरिद्वार में गंगा का सौंदर्य देखने योग्य था। उसकी धारा कल-कल कर बह रही थी। गंगा में डुबकी लगाकर जैसे मन परम शान्ति को पा गया था। गंगा के किनारे बने गंगा के मंदिर में हमने पूजा अर्चना भी की। हमें पुजारी द्वारा बताया गया कि शाम की गंगा की आरती देखने योग्य होती है। उसके बाद हम पहाड़ी पर स्थित मनसादेवी के मंदिर पर ट्राली से गए।

ट्राली में बैठने का मेरा पहला अनुभव था। इसका हमने बड़ा आनंद उठाया। शाम को सही समय पर हम परिवार सहित गंगा किनारे पर पहुँच गए। वहाँ पुजारियों द्वारा गंगा माँ की आरती आरंभ हुई। दीपों से गंगाजी चमक रही थीं। ऐसा लगता था मानो दीपों का सुनहरा प्रकाश रूपी सोना गंगाजी में घुल गया हो और वह भी उनके समान स्वर्णमयी हो गई हो। आरती के स्वर ह्दय व मन को भक्ति भावना से ओत-प्रोत कर रहे थे।

मित्र तुम भी समय निकालकर हरिद्वार ज़रूर जाना। यह एक दैविक स्थल है। इसके दर्शन मात्र से सौभाग्य और सुख दोनों प्राप्त होता है। पत्र समाप्त करता हूँ। घर में सभी बड़ों को प्रणाम एवं छोटों को प्यार कहना।

तुम्हारा मित्र,

मानव

ग्रीष्मावकाश में पर्वतीय प्रदेश में हुए अनुभव को बताने हेतु मित्र को पत्र लिखिए।

मकान नं-73, गली नं-8,

पालम गाँव, नई दिल्ली-110045

दिनांक: ....

प्रिय मित्र प्रतीक,

मधुर स्नेह!

अब की गर्मियों की छुट्टियाँ बहुत ही अच्छी बीती क्योंकि इस बार मैं गर्मियों की छुट्टियों में मसूरी गया हुआ था। मेरी बहुत दिनों से पर्वतीय प्रदेश घूमने की इच्छा बनी हुई थी। परन्तु जाने का अवसर इस बार मिला। पिताजी ने छुट्टियों में ताऊजी के घर मसूरी जाने का कार्यक्रम बनाया। मसूरी के रास्ते में ऊँचे-ऊँचे देवदार के वृक्ष, ऊँचे-ऊँचे पर्वत और छाई हरियाली मन को मोह लेती थी। मसूरी के मौसम का अपना ही मज़ा है। वहाँ अचानक कोहरा छा जाता है, अचानक बारिश पड़ने लगती है और अचानक ही मौसम साफ़ भी हो जाता है।

मैं वहाँ के प्रसिद्ध कैम्टी फॉल, कंपनी गार्डन और लाल टिब्बा आदि स्थान घूमने गया था। वहाँ की चहल-पहल और शोभा देखते ही बनती थी। माल रोड़ में मैंने परिवार के साथ बहुत खरीदारी की और बड़ी मौज़-मस्ती भी की। वहाँ हमें प्रसिद्ध अंग्रेजी के लेखक 'रस्किन बाँड' से मिलने का अवसर भी प्राप्त हुआ। यह एक हफ़्ता कितने मज़े में निकला कहते नहीं बनता। यह यात्रा मैं कभी भूल नहीं पाऊँगा।

मित्र तुम्हें भी एक बार वहाँ घूमने अवश्य जाना चाहिए। अवसर मिला तो हम दोनों साथ अवश्य जाएँगे। पत्र समाप्त करता हूँ। अपने माता-पिता को मेरा नमस्कार कहना। तुम्हारे पत्र का इंतजार रहेगा, पत्र अवश्य लिखना।

तुम्हारा मित्र,

निशांत

मित्र का जन्मदिवस भूल जानने पर उससे क्षमा-याचना करते हुए

786, मुरादाबाद।

दिनांक:............

प्रिय कंगना,

बहुत स्नेह!

बहुत दिनों से तुम्हें पत्र लिखना चाह रही थी। परन्तु परीक्षा की तैयारियों में व्यस्त होने के कारण लिख नहीं पाई। आशा करती हूँ कि तुम अपने परिवार के साथ सुखपूर्वक होगीं। मुझे लगता है, तुम मुझसे बहुत नाराज़ हो क्योंकि इस बार मैं तुम्हारा जन्मदिन भूल गई थी। अपनी इस भूल के लिए तुमसे क्षमा माँगती हूँ।

तुम्हीं मेरी एकमात्र सबसे प्यारी सखी हो। तुम्हें मैंने सखी के समान नहीं बल्कि अपनी बहन के समान ही माना है।

इस बार तुम्हारे जन्मदिन के समय माताजी की बहुत तबीयत खराब थी। चिकित्सक के अनुसार उन्हें मलेरिया हो गया था। सारे घर की ज़िम्मेदारी मेरे सर पर आन पड़ी थी। परीक्षा भी नज़दीक थी। घर के काम के साथ-साथ इस बार मुझे परीक्षा की भी तैयारी करनी पड़ी । ईश्वर ही जानता है कि मैं सदैव तुम्हारे शुभ की कामना करती हूँ। मैंने चाहे तुम्हें पत्र के द्वारा शुभकामनाएँ लिखकर न भेजी हो। परन्तु मन ही मन तुम्हें ढेरो शुभकामनाएँ दी हैं।

आशा करती हूँ अपनी सखी की इस गलती को तुम क्षमा कर दोगी और मुझे पत्र अवश्य लिखोगी। घर में सभी बड़ों को मेरा प्रणाम कहना और छोटों को प्यार। तुम्हारे पत्र का इंतजार रहेगा।

तुम्हारी प्रिय सखी,

राखी

अपने मित्र से उसके रंग मंगाने के लिए पत्र लिखिए।

4/37, प्रेम नगर,

नई दिल्ली-110003

दिनांक: ....

प्रिय मित्र रमेश,

मधुर स्नेह!

कुछ दिनों पहले तुमसे बात हुई थी। उसके बाद न ही तुम्हारा फोन आया और न ही पत्र। अत: मैंने तुम्हें पत्र लिखने का निश्चय किया। आगे समाचार यह है कि पंद्रह दिन बाद हमारे विद्यालय में कला प्रतियोगिता है। इस प्रतियोगिता में मैंने भी भाग लिया है। मित्र इसी विषय पर मैं तुमसे सहायता चाहता हूँ। तुम्हारे पास बहुत सुंदर और अच्छे रंग हैं। मेरी परेशानी यह है कि मैं इतने महंगें रंग नहीं खरीद सकता हूँ। यह बात तुम भी भली-भांति जानते ही हो।

यदि मेरे पास रंग नहीं होगें तो मैं शायद यह प्रतियोगिता नहीं जीत पाऊँगा। इस प्रतियोगिता को जीतना मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इस प्रतियोगिता में जीतने वाले विद्यार्थी को पाँच हज़ार का पुरस्कार मिलेगा। तुमने हर अच्छे-बुरे समय में मेरी सहायता की है। इस समय में भी तुम मेरा साथ अवश्य दोगे, यह मेरा विश्वास है। प्रतियोगिता समाप्त होते ही मैं तुम्हारे रंग लौटा दूँगा।

अत: तुमसे आशा करता हूँ कि तुम मेरी सहायता करोगे और मुझे अपने रंग अवश्य दोगे। तुम्हारी इस सहायता का मैं सदैव आभारी रहूँगा। बड़ों को मेरा नमस्कार कहना। तुम्हारे उत्तर की प्रतीक्षा रहेगी। पत्र अवश्य लिखना।

तुम्हारा मित्र

अभिनव

परीक्षा में अनुत्तीर्ण हुए मित्र को सहानुभूति पत्र लिखिए।

25, होर्न बाई रोड,

मुंबई।

दिनांक: ....

प्रिय विकास,

बहुत प्यार!

हमारे मित्र गोविंद से तुम्हारा परीक्षा परिणाम जानकर बहुत हैरानी हुई कि तुम इस वर्ष अपनी कक्षा में अनुत्तीर्ण हो गए हो। मित्र दुखी होने की आवश्यकता नहीं है।

विद्यालय में तुम सभी अध्यापकों के प्रिय हुआ करते थे। मुझे अच्छी तरह से पता है, तुमने रात-रात जागकर अपनी पढ़ाई की है। तुमने वे सभी प्रयास किए हैं जो एक विद्यार्थी को करने चाहिए। तुम्हारे इन प्रयासों का मैं साक्ष्य हूँ।

तुमने पिछली सभी कक्षाओं में प्रथम स्थान प्राप्त किया है जो तुम्हारी बुद्धिमता का प्रमाण देते हैं। तुम्हारे परीक्षा परिणाम के विषय में सुनकर तो विश्वास ही नहीं होता कि यह तुम्हारा परिणाम है।

मित्र अधिक दुखी होने की आवश्यकता नहीं है। मेरी तुमको यही सलाह है कि तुम अगली परीक्षा के लिए अभी से परिश्रम करने में जुट जाओ। भगवान ने चाहा तो तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी। असफलता हमें एक सबक देती हैं। इससे सबक लेकर अपनी कमियों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। देखना अगली बार तुम फिर से प्रथम स्थान प्राप्त करोगे। मेरी शुभकामनाएँ सदैव तुम्हारे साथ हैं।

आशा करता हूँ कि तुम विलाप करना छोड़कर अपनी पढ़ाई में लग गए होगें। सबको मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारा मित्र,

विनय

वाद-विवाद प्रतियोगिता में अपनी सफलता का विवरण देते हुए मित्र को पत्र लिखिए।

582, सेक्टर-1,

नेताजी नगर-110023

दिनांक: ....

प्रिय सुरेश,

बहुत प्यार!

आशा करता हूँ तुम भगवान की कृपा से कुशलमंगल होंगे। मैं भी यहाँ कुशलमंगल हूँ। आज तुम्हें पत्र लिखने का खास कारण यह है कि हमारे विद्यालय में वाद-विवाद प्रतियोगिता थी। इस प्रतियोगिता में मैंने भी अपना नाम दिया था।

हमारे विद्यालय में आयोजित इस प्रतियोगिता में विषय था "लोगों की देश के प्रति भूमिका", जिसमें विद्यार्थियों को आपस में वाद-विवाद करने को कहा गया। मैंने इस विषय पर सकारात्मक विचार प्रस्तुत किए। मेरे विपक्ष में बैठे प्रतिद्वंदी ने उसके विरोध में अपनी दलीलें दीं। परन्तु मेरा पक्ष इतना प्रभावशाली था कि उसकी दलीलें मेरे समक्ष कमज़ोर रहीं। मेरे विचार इतने सशक्त व प्रभावशाली थे कि सबके द्वारा मेरी सराहना की गई। मैंने इस प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया है।

प्रधानाचार्य द्वारा प्रथम पुरस्कार देते हुए सभी दर्शकों ने मेरा उत्साह तालियों से बढ़ाया। यह क्षण मेरे जीवन में अविस्मरणीय है। तुम्हें मेरी यह सफलता जानकर अति प्रसन्नता होगी कि तुम्हारे मित्र को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

तुम्हारा मित्र,

जयदेव

धूम्रपान के दोषों का उल्लेख करते हुए मित्र को पत्र द्वारा सचेत कीजिए।

6, हरिनगर आश्रम,

नई दिल्ली-110014

दिनांक: ....

प्रिय मित्र हरि,

बहुत प्यार!

बहुत दिनों से सम्पर्क न होने के कारण तुम्हें पत्र लिख रहा हूँ। कुछ समय पूर्व मुझे ज्ञात हुआ कि तुमने धूम्रपान करना आरम्भ कर दिया है। यह जानकर मुझे बहुत कष्ट हुआ।

तुम एक पढ़े-लिखे व समझदार विद्यार्थी हो। तुम्हें इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि धूम्रपान करने से बहुत तरह की बीमारियों का सामना करना पड़ता है। यह धीरे-धीरे मनुष्य को अंदर-ही-अंदर खोखला बना देता है। धूम्रपान करने से व्यक्ति के फेफड़ों में सक्रंमण होने का खतरा बढ़ जाता है। इससे तपेदिक (टी.बी) व दमा जैसी बीमारियाँ शरीर में घर बना लेती हैं। यह व्यसन आरंभ में तुम्हें आंनद तो देगा परन्तु उसके घातक परिणाम तुम्हें आगे चलकर पता चलेंगे।

अत: तुम्हें चाहिए कि तुम इस व्यसन को छोड़ दो। इस व्यसन को छोड़ने के लिए सुबह उठकर व्यायाम व योगा करो, संयम से काम लो तभी तुम स्वयं का हित कर पाओगे। यह व्यसन किसी भी रूप में लाभकारी नहीं है। आज की पीढ़ी बिना अपना भला-बुरा जाने देखा-देखी में स्वयं को बर्बाद करने में लगी हुई है।

तुम्हें चाहिए कि जितना शीघ्र हो सके तुम इसे छोड़ने का प्रयास करो। योगा तुम्हारा मनोबल बढ़ाएगा तथा व्यायाम से तुम स्वयं को तरोताज़ा महसूस करोगे। व्यायाम व योगा से धूम्रपान का दुष्प्रभाव भी कम हो जाता है।

तुम्हारा मित्र,

बीरेन्द्र

अपरिचित द्वारा की गई सहायता के लिए धन्यवाद करते हुए पत्र लिखिए।

261, एफ ब्लाक,

लाजपत नगर,

साहिबाबाद।

दिनांक: ....

आदरणीय अभिषेक जी,

मेरा नाम शिखा है। मैं वही लड़की हूँ जिसकी आपने सहायता की थी। मेरी आपसे मुलाकात नहीं हो पाई थी। लेकिन आपसे मेरा इंसानियत का रिश्ता जुड़ गया है। आप एक अच्छे इंसान हैं। आपको पत्र लिखने का मेरा यही उद्देश्य था कि मैं स्वयं आपको धन्यवाद कह सकूँ।

मैं उस दिन की घटना कभी भूल नहीं सकती, जब मैं अपने विद्यालय से घर जा रही थी। घर जाने के लिए मैंने रिक्शे में बैठना उचित समझा। हमारा रिक्शा अभी रास्ते में चल ही रहा था कि कुछ शरारती लड़कें तेज़ी से कार चलाते हुए गलत दिशा से आ रहे थे। रिक्शावाला तेज़ी से आती गाड़ी से स्वयं को बचा नहीं सका। मुझे सिर्फ इतना याद था कि हमारा रिक्शा तेज़ी से हवा में उछला और मैं बेहोश हो गई।

माताजी ने बताया कि आप वहीं से जा रहे थे। रिक्शावाले को मामूली-सी चोटें आईं थीं। परन्तु मैं रोड़ में गिरी जिससे मेरे सर में चोटें आईं। मेरे एक पैर की हड्डी टूट गई और एक हाथ भी बुरी तरह छिल गया। आपने किसी भी बात की परवाह न करते हुए मुझे उठाया और अस्पताल ले आए। आपने मेरा तत्काल उपचार कराया। आपकी ही सूझबूझ से वे लड़के पकड़े गए और आज मैं सही सलामत हूँ। आज के ज़माने में इतने ज़िम्मेदार व्यक्ति कहीं नहीं मिलते हैं। आपके इस कार्य के लिए मैं सदैव आपकी आभारी रहूँगी। आपकी इस सहायता के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

भविष्य में मैं आपके किसी भी काम आ सकूँ तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा। मुझे अवश्य याद कीजिएगा।

एक बार फिर से मैं आपका हृदय से धन्यवाद करती हूँ।

भवदीय,

शिखा